IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर.आधुनिकता और भारतीय समाज

डाण्सुजाता गुप्ता
पीएचण्डीण्एयूजीसी नेट
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभाएमद्रास

शोध सारांश

उत्तर .आधुनिकता एक निश्चित विचार या दर्शन से अधिक एक प्रवृत्ति का नाम है एजिसका जन्म मुख्यतः बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में यूरोप में हुआ। साहित्य समाजए विज्ञान एवं आम जीवन के अनेक क्षेत्रों में इस प्रवृत्ति के लक्षण दिखलाई पड़ते हैं। वैसे अलग.अलग क्षेत्रों में उत्तर आधुनिकता के अलग अलग आयाम हैं किंतु सभी क्षेत्रों में इसकी एक प्रमुख पहचान बन गई है कि यह आधुनिकता के चेतना के साथ पूर्व आधुनिकता की ओर भी देखती है औद्योगिक उत्पादों की एकरूपता ने जीवन में एक रास्ता ला दी थीए जिसके कारण यूरोपीय समाज में उन चीजों को पुनः प्राप्त करने की इच्छा उत्तर आधुनिकता में दिखलाई देती है। इस प्रवृत्ति की मूल चेतना आधुनिक ही है एक्योंकि इसका विकास एवं इसकी अस्मिता का आधार वही उद्योग हैं एजो आधुनिकता की देन है । उद्योगों ने यातायात एवं संचार के अनेक साधन विकसित किए एजो सांस्कृतिक प्रवृत्ति के उत्प्रेरक बने जिनके माध्यम से विश्व ग्राम की स्थिति पैदा हुई।

संकेत शब्दरू.उत्तर.आधुनिकताए आधुनिकताए भूमंडलीकरणए बाजारवादएस्थानीयताएए उपभोक्तावादएकेन्द्रीयताएआवारा पूंजीएवसुधैव कुटुम्बकम

प्रस्तावना रू

उत्तर .आधुनिकता को समझने के लिए सर्वप्रथम हमें आधुनिकता को समझना होगा। पारंपरिक जीवन मूल्यों से हटकरए पारंपरिक मान्यताओं से हटकर एक नई अस्मिता को स्थापित करने का प्रयास ही आधुनिकता है । आधुनिक शब्द का प्रयोग प्रत्येक क्षेत्र के लिए होता है । आधुनिक विश्व एआधुनिक मनुष्य और आधुनिक फैशन। छ्मॉडर्नश् की व्युत्पत्ति लैटिन से हुई है और इसका अर्थ है एश्हाल ही में गठितश् या श्वर्तमानश्। ष्मैक्स वेबर के अनुसार ष्आधुनिकता की जड़ में तार्किकता है।आधुनिकता एक समय सापेक्ष संकल्पना है।ष 2हर युग अपने .आप में आधुनिक होता है। युग के प्रति सतर्कता ही आधुनिक बोध की सबसे बड़ी पहचान है। युग के प्रति सतर्कता ही ऋण के रूप में प्रकट होता है। आधुनिकता .बोध परंपरा को अस्वीकार करने के बजायए उस में निरंतर विकास की संभावनाएं ढूंढता है। ष्उत्तर .आधुनिकता एक भूमंडलीय ज्ञान अवस्था हैए जिसमें हम सब शामिल हैं। यह ज्ञान की अवस्था के बदल जाने की आत्म स्वीकृति है। ष्सांस्कृतिक बदलाव व्यवसाय के भी बदल जाने का रूप है। कहीं वह नीत्से का पुनर्जन्म बाद है एतो कहीं वह महावृतांत इतिहास का अंत है। आधुनिकता के केंद्रवाद का केंद्र हैए तो कहीं उत्पादन से उपभोक्ता की ओर अपसारण है। कहीं वह देश का अंत है एतो कहीं वह भूमंडलीय स्थिति है। कहीं वह राष्ट्र राज्यों की सांस्कृतिक सीमाओं का विज्ञान हैए तो कहीं वह एक साथ भूमंडलीयता और स्थानीयता हैए कहीं बोध ना होने की अवस्था है। सबसे बड़ी बात उत्तर आधुनिकता के संदर्भ में यह है जो तकनीक और भूमंडलीय पूंजीवाद ने दुनिया के तमाम देशों की भौगोलिक सीमाओं को हिलाना शुरू कर दिया और सांस्कृतिक सीमाओं में घुसपैठ शुरू कर दी। कल तक हमारे पास उपलब्ध जो भी उपकरण था एवह सभी पुराने पड़ चुके हैं। सुधीश पचौरी के अनुसार ष्माध्यमों ने यथार्थ के साथ हमारे संबंध को बदल दिया है। हम सीधे ऐन्द्रिक बोध से पुष्ट यथार्थ को ग्रहण करते हैं। तकनीक ने सूचना का अति बोध बढ़ा दिया है ।हम स्थानीय हो उठे हैं या भूमंडलीय। दूसरी प्रकृति संस्कृति पहली प्रकृति को ढके जा रही है। हमारी भाषा बदल रही है। हमारे प्रतीक बदल रहे हैं। हमारे ढंग बदल रहे हैं।ष ज्ञान की जगह उपभोग विकास का नया औजार है।विचारधारात्मक केंद्रवाद विश्रृंखलित हो रहा है और नए केंद्र बन रहे हैंए कहीं धार्मिक एकहीं जातिगत एकहीं स्त्री .रूपों के तो एकहीं सांस्कृतिक पहचान के केंद्र बन रहे हैं। यह भूमंडलीय समय है एजिसमें मनुष्य एक साथ विश्व नागरिक भी है और स्थानीय भी। एक तरफ जहां समूचा विश्व एक परिवार है। पचौरी जी के अनुसार यह एक अनाथतत्व है एजो उत्तर .आधुनिकता का भी प्रस्थान बिंदु हैए जो विकास के समूचे नक्शे पर पुनर्विचार मांगता है ।कभी खुले बाजार एकभी हाशियों में एतो कभी स्थानीयतावाद में भटकता है। आज का समय भूमंडलीय समय है। मनुष्य आज विश्व नागरिक और स्थानीय नागरिक दोनों है। उत्तर .आधुनिकता के केंद्र में बहुराष्ट्रीय आवारा पूंजी की भूमंडलीयता है। इस तरह पूंजीवाद ने स्वयं को एक व्यवस्था सिद्ध किया है। देश काल में परिवर्तन के साथ यथार्थ में इसके कारक होते हैं युगीन चेतना या बोध। अंतिम दशक में हिंदी कहानी में आधुनिक चेतना विभिन्न दर्शनों तथा चिंतन का प्रभाव पड़ चुका था। आधुनिकता ने मनुष्य में संवेदनहीनता बढ़ाई ।सामाजिक रिश्ते बदलेए संबंध टूटे और व्यक्तित्व तथा स्वार्थ बड़ा। कफनए बूढ़ी काकी एबेड़ीए उसने कहा था एसे यह स्थिति नई कहानी के दौर में भी चीफ की दावत एवापसीए आदि में तथा अंतिम दशक तक की कहानियों में दिखलाई देती है। मार्क्सवाद के प्रभाव से प्रगतिवादी आंदोलन की कहानियों में सर्वहारा का आंदोलन शोषण के विरुद्ध है। यह भी अंतिम दशक तक बना है अस्तित्ववाद या शायद आदि के दर्शनों के आधार पर मनुष्यता की व्याख्या करने की प्रवृत्ति कहानी में लिखी गई है । सारी दुनिया की अर्थव्यवस्था में अमेरिका नियंत्रित कर रहा है भूमंडलीकरण उदारीकरण अब सभी जगहों में गुंजायमान है। भारतीय पूर्वजों के श्वसुधैव कुटुंबकम श्की जगह नव उदारीकरण ने ले ली है। विश्व कल्याण की कल्पनाओं को दरकिनार करकेए दुनिया में मुनाफे ने अपनी जगह ले ली है।

भूमंडलीकरण का अस्तित्व देकर इसे व्याख्यान किया जा रहा है। डेनियल बेल ;विचारधारा का अंतद्धए फ्रांसिस फुकुयामा; इतिहास का अंत द्धएऔर जैक देरिदा; मार्क्सवाद का अंत एवं विखंडन वाद द्धजैसे पश्चिमी सिद्धांत का अंतर्राष्ट्रीय प्रभुत्व वर्ग के नव उदारवादी वजूद को ही व्याख्यायित और सूत्रबद्ध कर रहे हैंए जिसे नाम दिया जा रहा है .उत्तर .आधुनिकता का। समकालीन कहानी के परिदृश्य में पुराने नए कथाकारो ने भिन्न.भिन्न संवेदनात्मक पहलुओं पर विचार किया है। भूमंडलीकरणए उदारीकरणए बाजारवाद और उपभोक्तावाद का मौजूदा दौर वर्तमान समय की प्रमुख विशेषता है। इस दौर में आम आदमी संघर्षशील हो गया हैए उसकी परेशानियां बढ़ गई है और आर्थिक समस्याएं गहन हो गई हैं। हिंदी साहित्य में भी ऐसे ही बदलाव नजर आए एजिसमें तत्कालीन जीवन संघर्षों को प्रकाट्य रूप में उन्हें उधेड़ा ।उसे छिपाते हुए नहीं एबल्कि उसे उसी रूप में चित्रित कियाए जो सत्य है। अनेकों कहानियों में अनेकों पात्रों में जीवन के अंतर्विरोधों को दर्शाया है और हम स्वयं को भी उसी जगह पाते हैं। श्पॉल गोमरा का स्कूटरश बाजारवाद और उपभोक्तावाद के झंझट में उलझे व्यक्ति की कथा हैए जो प्रलोभनों में उलझकर स्कूटर तो खरीद लेता है एमगर उसे चलाने नहीं आता ।उसी उधेड़बुन में उसका स्कूटर एक्सीडेंट कर जाता है एजिसमें उसके सहयोगी की मृत्यु हो जाती है और वह पागल होकर इधर.उधर भटकता रहता है। बाजारवाद का मायातंत्र इतना प्रभावी और त्वरित होता है एजिसमें व्यक्ति की समझ उसके अच्छे .बुरे समझने की बुद्धि मंद हो जाती है और वह समय की इच्छाओं के प्रभाव में बहता चला जाता है। अखिलेश की कहानी श्जलडमरूमध्य श्में परिवार के लोगों के बीच की संवेदना पैसे को ही लेकर है। अन्यथा अपने पुश्तैनी जमीन और जड़ों की ओर लौटना अब असंभव सा है। चीजें आउटडेटेड हो चुकी हैं। सहाय जी जब अपने वृद्धावस्था में अपने पैतृक गांव जाकर रहने का निर्णय लेते हैंए जहां कुछ भी पहले जैसा नहीं रहता है। बाजार .संस्कृति और भोगवादी प्रवृत्ति ने गांव को भी ले लिया है । उनके 26 कमरों वाले पुश्तैनी हवेली कोए गड़े धन के लालच में गांव के लोगों ने खोद . खोद कर तहस.नहस कर दिया है। इन चीजों से सहाय जी को जबरदस्त सदमा लगता है और वह गुम सुम हो जाते हैं। अंततः शेयरों एफार्म हाउस आदि में संपत्ति लगाने वाले अपने भोग विलास पूर्ण बेटा बहू के हाथों ही ठगे जाते हैं। यह त्रासद स्थिति हैए जिसमें आपके अपने ही आपको केवल अर्थ एभोग एविलास आदि कारणों से धोखा देने लगते हैं। दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद दुनिया के देशों में आपसी संबंधों के स्तर पर अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। विभिन्न राष्ट्रों ने एक दूसरे के प्रति एक सामंजस्यपूर्ण व्यवहार अपनाया । आदमी. आदमी के बीच पलता विद्वेष और घृणा मनुष्यता के विकास में बाधक है। औद्योगिकरण के बाद मनुष्य के मानवीय मूल्य निरंतर ही क्षरित हो रहे हैं और यथार्थ की यही चुभन एसाहित्य में जगह पाती रही है। समकालीन हिंदी कहानियों में उत्तर .आधुनिकता का प्रथम प्रयोग मनोहर श्याम जोशी की रचनाओं से परिलक्षित हुआ है। मनुष्य अपना जीवन एक दिखावे के रूप में जीता है और स्वयं को मॉडर्न बनाने में लगा रहता है ।उसके स्पंदन को महसूस करने के लिए वह खुद वहां नहीं है एकेवल मशीनों में उलझा हुआ है।ः आप पायजामा में नाड़ा तक तो डाल नहीं सकते और दम भरते हैं कुछ डिफरेंट कर दिखाने का आप वही डिफरेंट हो सकते हैं एजहां जनेऊ कील पर टांग देने से डिफरेंट हुआ जा सकता है।ः6 वैश्वीकरण की अवस्था में श्विभिन्नता श्एक बुनियादी प्रश्न की भांति हमारे सामने आया है। केंद्र से परिधि की ओर चलने के कारण दलित एआदिवासी एनारी समाज एस्त्री.पुरुषए हाशिए पर रखे लोगए जिनकी समाज में कोई पहचान न थीए उत्तर. आधुनिकता में सबको जगह मिली और सभी ने अपनी एक नई पहचान बनाई। वैश्वीकरण की इसी अवस्था ने हमारे हिंदी साहित्य को भी प्रभावित किया है। इसी कारण श्ग्लोबलाइजेशन श्शब्द का व्यापक प्रभाव हमारी कहानियों में पाया जाने लगा । यह कोई आरोपित प्रभाव नहीं हैए बल्कि आज का यथार्थ है। यह मैं हूंए यह मेरा परिवार है और यही मेरा समाज भी है। और यही उत्तर आधुनिकता है । हम गिरते गए एसब कुछ पचाते गए एसंस्कारों को परे रखकर हमने सारी विद्रूपताओं को उच्छृंखलताओं को अपनायाएयही उत्तर आधुनिकता है। हम संवेदनहीन बनते चले गए ।जब तक चीजें हमें प्रभावित नहीं करतीए हम तटस्थ रहते हैं एयही उत्तर आधुनिकता है । इस बदलाव से व्यक्ति की मानसिकता लड़खड़ाती चली गई और समाज में विश्रृंखलता बढ़ती गईए जिसका प्रभाव हिंदी कहानी में टूटन एबिखराव बनकर उभरा। कहानी के प्लॉट में ऐसे ही पात्र चित्रित हुए हैं।

संदर्भ

1ण्आक्सफोर्ड डिक्सनरी
2ण्ण्प्रमोद तलेगिरीयआधुनिकता की एक समीक्षा पृरू56
3 सुधीश पचौरीएसं .देवशंकर नवीनएपृ.17
4ण्सुधीश पचौरी श्उत्तर.आधुनिकता और माक्सश
5ण्मनोहर श्याम जोशी श्कुरु कुरु स्वाहाश पृ.80